UNIVERSITY NEWS 05 OCTOBER 2026

AMRIT VICHAR

एक मुहिम | अखबारों की घर वापसी

समाचार पत्र पढ़ने से भाषा, अभिव्यक्ति और शब्दावली होती समृद्ध

वर्तमान ज्ञान-आधारित समाज में सूचना केवल जागरूकता का माध्यम नहीं, बल्कि चिंतन, निर्णय और सामाजिक सहभागिता का आधार बन चुकी है। ऐसे समय में समाचार-पत्र का अध्ययन विद्यार्थियों के बौद्धिक विकास और समसामयिक चेतना के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। डिजिटल माध्यमों की व्यापक उपलब्धता के बावजूद समाचार-पत्र का महत्व इसलिए बना हुआ है क्योंकि यह घटनाओं को संदर्भ, क्रमबद्धता और विश्लेषण के साथ प्रस्तुत करता है।

विश्वविद्यालयीय शिक्षा का उद्देश्य केवल विषयगत ज्ञान प्रदान करना नहीं, बल्कि विद्यार्थियों में आलोचनात्मक चिंतन, तार्किक विवेक और स्वतंत्र दृष्टि विकसित करना भी है। नियमित रूप से समाचार-पत्र पढ़ने से विद्यार्थी राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय घटनाक्रमों, सामाजिक परिवर्तन, आर्थिक नीतियों, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, पर्यावरण, शिक्षा और सांस्कृतिक विमर्श से परिचित होते हैं। संपादकीय एवं विश्लेषणात्मक सामग्री उन्हें किसी विषय के विभिन्न पक्षों को समझने तथा तथ्यों और विचारों के बीच अंतर करने की दृष्टि प्रदान करती है। समाचार-पत्र का अध्ययन भाषा-कौशल और अभिव्यक्ति क्षमता को भी समृद्ध करता है। विशेष रूप से विद्यार्थियों में शब्द-भंडार, लेखन शैली, तर्क प्रस्तुत करने की क्षमता तथा समसामयिक संदर्भों का अकादमिक उपयोग विकसित करने में इसकी उपयोगिता महत्वपूर्ण है। नियमित समाचार-पठन से भाषा, अभिव्यक्ति और शब्दावली समृद्ध होती है। साथ ही, सरकारी नीतियों, न्यायिक निर्णयों, सामाजिक समस्याओं और आर्थिक परिवर्तनों की जानकारी व्यक्ति को शासन-प्रक्रिया के प्रति अधिक संवेदनशील और उत्तरदायी बनाती है। आज सूचना की तीव्रता के साथ उसकी विश्वसनीयता का प्रश्न भी उतना ही महत्वपूर्ण है। अतः विद्यार्थियों के लिए आवश्यक है कि वे सूचना को केवल ग्रहण न करें, बल्कि उसका आलोचनात्मक परीक्षण भी करें। मेरा मानना है कि प्रतिदिन समाचार-पत्र पढ़ने की आदत विद्यार्थियों को अधिक जागरूक पाठक से आगे बढ़ाकर विवेकशील, संवेदनशील और उत्तरदायी नागरिक बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान दे सकती है।

-प्रो. जेपी सैनी, कुलपति, लखनऊ विश्वविद्यालय

प्रो. जेपी सैनी

- बौद्धिक विकास को समाचार पत्र पढ़ना टॉनिक जैसा

HINDUSTAN

निरीक्षण के दौरान संबंधित विभाग के टाइम टेबल से कक्षा का मिलान होगा

एलयू में वीसी अचानक कक्षा में जाकर लेंगे पढ़ाई का हाल

फैसला

लखनऊ, प्रमुख संवाददाता। लखनऊ विश्वविद्यालय में शिक्षण व्यवस्था को और प्रभावी बनाने के लिए अब कक्षाओं की नियमितता पर सीधे नजर रखी जाएगी। विश्वविद्यालय प्रशासन ने कक्षाओं में शिक्षकों की मौजूदगी सुनिश्चित करने के लिए औचक निरीक्षण की तैयारी शुरू कर दी है। खास बात यह है कि इन निरीक्षणों की कमान कुलपति प्रो. जेपी सैनी खुद संभालेंगे।

नई व्यवस्था के तहत कुलपति किसी दिन बिना पूर्व सूचना के विश्वविद्यालय की किसी भी कक्षा में पहुंच सकते हैं। निरीक्षण के दौरान संबंधित विभाग के टाइम टेबल से कक्षा का मिलान किया जाएगा और देखा जाएगा कि निर्धारित समय पर संबंधित शिक्षक पढ़ाने के लिए मौजूद हैं या नहीं। इसके साथ ही विद्यार्थियों से कक्षा में पढ़ाई और शिक्षण व्यवस्था को लेकर उनकी राय भी ली जाएगी। विश्वविद्यालय प्रशासन का मानना है कि इस पहल से कक्षाओं के संचालन में नियमितता आएगी और शिक्षक-छात्र दोनों की अकादमिक गतिविधियों में गंभीरता बढ़ेगी। यदि निरीक्षण के दौरान कोई शिक्षक निर्धारित कक्षा से अनुपस्थित पाया जाता है तो उससे इसकी वजह पूछी जाएगी और जवाब मांगा जा सकता है।

- कक्षा में शिक्षकों की मौजूदगी सुनिश्चित करने की तैयारी
- निरीक्षणों की कमान कुलपति प्रो. जेपी सैनी खुद संभालेंगे

विभाग स्तर पर कक्षा की जिम्मेदारी विभागाध्यक्षों की

कुलपति प्रो. जेपी सैनी ने बताया कि फिलहाल विभाग स्तर पर कक्षाओं की निगरानी की जिम्मेदारी विभागाध्यक्षों की है। हालांकि, अब विश्वविद्यालय स्तर पर भी इसकी प्रत्यक्ष मॉनिटरिंग की जाएगी। उन्होंने कहा कि औचक निरीक्षण के दौरान शिक्षकों के साथ बातचीत करने के साथ विद्यार्थियों से भी पढ़ाई को लेकर सुझाव लिया जाएगा।

किसी भी विभाग की कक्षा में अचानक पहुंचेंगे

कुलपति ने कहा कि निरीक्षण का कोई निश्चित समय या विभाग तय नहीं होगा। किसी भी विभाग की कक्षा में अचानक पहुंचकर व्यवस्था का जायजा लिया जा सकता है। विश्वविद्यालय प्रशासन का उद्देश्य अकादमिक व्यवस्था को मजबूत करना और यह सुनिश्चित करना है कि विद्यार्थियों को निर्धारित समय पर नियमित रूप से पढ़ाई का अवसर मिले। जिससे विद्यार्थियों का कोर्स समय से पूरा हो सके और परीक्षाओं के समय कोई संकट नहीं हो। इसीलिए एलयू कुलपति ने यह निर्णय लिया है ताकि कोई समस्या न हो। सभी समस्याओं का समाधान हो सके।

NBT

डिजिलॉकर में ही मिलेंगी डिग्री और मार्कशीट

Zeeshan.Rayini
@timesofindia.com

■ लखनऊ: शहर के विश्वविद्यालयों में भविष्य में डिग्री और मार्कशीट की हार्ड कॉपी मिलना बंद हो सकती है। राजधानी के दो बड़े संस्थान लखनऊ विश्वविद्यालय (LU) और डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम प्राविधिक विश्वविद्यालय (AKTU) इस दिशा में काम शुरू कर चुके हैं। राज्यपाल की ओर से विश्वविद्यालयों को मिले निर्देशों के बाद दोनों संस्थान इसकी तैयारी में जुटे हैं।

एलयू में आई-कार्ड से हुई शुरुआत : लखनऊ विश्वविद्यालय ने इस व्यवस्था की शुरुआत करते हुए मौजूदा सत्र से फिजिकल आई-कार्ड देना बंद कर दिया है। छात्रों को अब डिजिलॉकर में डिजिटल आई-कार्ड दिया जा रहा है। एलयू में करीब 4 लाख छात्र हर साल परीक्षा देते हैं। सालाना लगभग 8 से 10 लाख मार्कशीट छपवानी पड़ती है।

मार्कशीट की जगह मिलेगी ट्रांसक्रिप्ट : एकेटीयू में भी डिग्री-मार्कशीट को ऑनलाइन करने की कवायद चल रही है। विवि ने पासआउट छात्रों को निःशुल्क ट्रांसक्रिप्ट भेजने का फैसला लिया है, जिसमें सभी सेमेस्टर के अंक एक साथ दर्ज होते हैं। एकेटीयू की योजना है कि अलग-अलग सेमेस्टर की मार्कशीट डिजिलॉकर में सॉफ्ट कॉपी के रूप में दी जाए, जबकि ट्रांसक्रिप्ट की हार्ड कॉपी छात्रों को उपलब्ध कराई जाए।

> हम इस दिशा में काम कर रहे हैं। आईकार्ड को डिजिटल कर दिया है। ये तुरंत लागू नहीं होगा धीरे-धीरे इस पर काम करेंगे। - प्रो. जेपी सैनी, कुलपति एलयू

> राज्यपाल के निर्देश पर काम कर रहे हैं, फिलहाल अभी पुरानी व्यवस्था के तहत ही मार्कशीट दी जाएगी, लेकिन चरणबद्ध तरीके से लागू किया जाएगा। - डॉ. दीपक नागरिया, परीक्षा नियंत्रक एकेटीयू

NBT Lens खबरों के अंदर की बात

क्या होगा फायदा

दस्तावेज के डिजिटल होने से विश्वविद्यालयों को हर साल कई करोड़ रुपये की सीधी बचत होगी। डिजिटल मार्कशीट की लागत छपाई खर्च के एक चौथाई से भी कम आएगी। इसके अलावा काम में गति आएगी, छात्रों को समय पर दस्तावेज मिलेंगे और किसी भी त्रुटि की स्थिति में संशोधन तेजी से हो सकेगा, जिससे छात्रों को विवि के चक्कर नहीं काटने पड़ेंगे।

NBT

क्लास से गायब रहने वालों से होगा जवाब तलब

■ NBT रिपोर्ट, लखनऊ : लखनऊ विश्वविद्यालय (LU) में अब क्लास से नदारद रहने वाले शिक्षकों की मुश्किलें बढ़ने वाली हैं। छुट्टियों के बाद कक्षाओं को नियमित करने के लिए विवि प्रशासन ने सख्त रुख अपनाया है। इसके तहत खुद कुलपति (VC) प्रो. जेपी सैनी क्लासरूम का औचक निरीक्षण करेंगे।

वीसी रोजाना किसी भी विभाग की क्लास में रैंडम पहुंचकर टाइम टेबल चेक करेंगे कि संबंधित शिक्षक मौजूद हैं या नहीं। निरीक्षण के दौरान अनुपस्थित मिलने वाले शिक्षकों से जवाब-तलब किया जाएगा। साथ ही कुलपति सीधे छात्र-छात्राओं से पढ़ाई और सिलेबस का फीडबैक भी लेंगे। कुलपति प्रो. जेपी सैनी ने बताया कि विभागों में विभागाध्यक्ष (HOD) तो अपने स्तर पर निगरानी कर ही रहे हैं, लेकिन व्यवस्था को और चुस्त-दुरुस्त करने के लिए बिना पूर्व सूचना के औचक निरीक्षण शुरू किया जा रहा है।

AMAR UJALA

कक्षाओं से नदारद मिले गुरुजी तो होगी कार्रवाई

माई सिटी रिपोर्टर

छात्रावासों के बाद अब कुलपति करेंगे नियमित कक्षाओं का निरीक्षण

लखनऊ। लखनऊ विश्वविद्यालय में छात्रावासों के निरीक्षण के बाद अब कक्षाओं की नियमितता पर जोर दिया जाएगा। अगर गुरुजी अपनी कक्षा में पढ़ाते न मिले तो उन पर कार्रवाई होगी।

कुलपति प्रो. जेपी सैनी ने बताया कि कक्षाओं में शिक्षकों के समय पर नहीं पहुंचने की शिकायतों के बाद औचक निरीक्षण की रणनीति तैयार की जा रही है। इसके तहत वह स्वयं किसी भी विभाग की कक्षा में बिना पूर्व सूचना पहुंचकर टाइमटेबल के अनुसार शिक्षक की मौजूदगी जांचेंगे। इस दौरान विद्यार्थियों से पढ़ाई और कक्षा संचालन का फीडबैक भी लिया जाएगा। अनुपस्थित शिक्षक से कारण पूछा जाएगा।

प्रो. सैनी ने कहा कि अभी विभागाध्यक्ष अपने स्तर पर कक्षाओं की निगरानी कर रहे हैं लेकिन जल्द ही विश्वविद्यालय स्तर पर भी औचक निरीक्षण शुरू होगा। इसका उद्देश्य कक्षाओं का नियमित संचालन सुनिश्चित करने के साथ विद्यार्थियों की उपस्थिति और पढ़ाई की गुणवत्ता में सुधार करना है।